RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित होता दैनिक

संपादक : श्री मनोजकुमार चंपकलाल शाह

रजी.ओफिस : टी.एफ-०१,नानकराम सुपर मार्केट,रामनगर,साबरमती,अहमदाबाद- ३८० ००५.गुजरात,भारत.

फोन /फेक्स : (०७९) २७५७ ३३०७, ९०१६३ ३३३०७ (मो) ९३२८३ ३३३०७, ९८२५३ ३३३०७, Email : • Email : garvigujarat2007@gmail.comgarvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

वर्ष : 08 | अंक : 339 | दि. 10-04-2019 बुधवार | वि.सं. 2075 | चैत्र सुद-०५ | पाना : 04 | किंमत : 00.50 पैसा

नौकरियों-कृषि मूल्यों की तुलना में इस बार फोकस राष्ट्रीय सुरक्षा पर

आम चुनाव में बहुमत हासिल कर सकता है एनडीए : पोल ऑफ पोल्स

मतदान से पहले सामने आए ४ ऑपिनियन पोल्स के औसत नतीजे बताते कि सत्तारूढ़ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन इस बार बहुमत हासिल करेगा

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, लोकसभा चुनाव के पहले चरण के मतदान से पहले सामने आए ४ ऑपिनियन पोल्स के औसत नतीजे बताते है कि सत्तारूढ़ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन इस बार भी बहुमत हासिल कर सकता है। गौर करने वाली बात यह है कि नौकरियों और कृषि मूल्यों की तुलना में इस बार फोकस राष्ट्रीय सुरक्षा पर है। महापोल के मुताबिक भारतीय जनता पार्टी की अगुआई वाला गठबंधन संसद की ५४३ सीटों में से २७३ सीटों में से २७३ सीटें जीत सकता है, जो सरकार बनाने के लिए जरूरी जादुई आंकड़े से एक ज्यादा है। पिछले चुनाव में इस अलायंस को ३३० से ज्यादा सीटें मिली थीं, जो तीन दशकों में मिला सबसे बड़ा जनादेश था। पिछले चार दिनों में सर्वे जारी करने वाली ज्यादातर पोलिंग एजेंसियों का कहना है कि फरवरी में पुलवामा आतंकी हमले में ४० सीआरपीएफ जवानों के शहीद होने के बाद पाकिस्तान से बढ़े तनाव से से मोदी का जनाधार काफी बढ़ा है। सी वोटर ने एक बयान में कहा, आज के भारत में हमने शायद पहली बार बेरोजगारी जैसे मुद्दों के आगे सुरक्षा के मसले को हावी होते देखा है। एजेंसी ने कहा कि आजीविका और आर्थिक हितों के संदर्भ में बीजेपी खुद को लोगों की नजर में कांग्रेस से बेहतर और अलग साबित नहीं कर पा रही है। हालांकि आतंकवाद पर अंकुश लगाने और उसका जवाब देने की जब बात आती है तो वही प्रतिभागी स्पष्ट तौर पर अंतर महसूस करते है। सीवोटर का पोल सबसे कंजर्वेटिव है, जिसने सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन को २६७ सीटें मिलने की संभावना जताई है। वहीं टाइम्स नाउ-वीएमआर के सर्वे ने सबसे ज्यादा २७९ सीटें जीतने की बात कही है। महापोल को देखें तो मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस और उसके सहयोगियों की सीटें बढ़कर औसत रूप से १४१ हो सकती है। आपतो बता दें कि १.३ अरब की आबादी वाले देश में चुनाव पूर्व हुए ऑपिनियन पोल्स में हजारों लोगों की राय ली जाती है और इससे पहले कई बार ये अविश्वसनीय भी साबित हो चुके है। इस बार ९० करोड़ लोग वोट देने के योग्य है। कांग्रेस ने बीजेपी पर आरोप लगाया है कि वह पाकिस्तान पर जवाबी एयर स्ट्राइक का राजनीतिक हथकंडे के तौर पर इस्तेमाल कर रही है। इसकी बजाय मुख्य विपक्षी पार्टी ने नौकरियों, किसानों की समस्या, महिलाओं के सशक्तीकरण जैसे कई मसलों को प्राथमिकता से उठाया है। हालांकि बीजेपी राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर जोर-शोर से आगे बढ़ रही है। पार्टी ने सोमवार को जारी किए गए अपने संकल्पपत्र में वादा किया है कि जम्मू-कश्मीर के लोगों को दशकों से मिल रहे विशेषाधिकार को वह खत्म करेगी। पीएम मोदी का दावा है कि वह पहले से ज्यादा सीटें जीतकर सत्ता में लौटेंगे जबकि कांग्रेस का कहना है कि देश के गरीब परिवारों को ७० हजार रुपये सालाना देने के उसके प्लान से सत्ता में लौटने में मदद मिलेगी।

मध्यप्रदेश में आयकर छापों पर मोदी

लोकसभा : कांग्रेस नेताओं के बक्सों से मिल रहे नोट

कांग्रेस के घोषणापत्र को ढकोसला पत्र बताते हुए पीएम नरेन्द्र मोदी ने कहा कि ये केवल कांग्रेस पार्टी के वादे हैं

(संपूर्ण समाचार सेवा) लातूर, पीएम नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस पर आज जमकर हमला बोला है। कांग्रेस के घोषणापत्र को 'ढकोसला पत्र' बताते हुए पीएम ने कहा कि ये केवल कांग्रेस के वादे हैं। मध्यप्रदेश में सीएम कमलनाथ के करीबियों पर आयकर विभाग के छापों का जिक्र करते हुए पीएम ने कहा कि वे ६ महीने से 'चौकीदार चोर है' बोल रहे थे लेकिन बक्सों में भरकर नोट कहां से निकला पीएम ने आरोप लगाया कि कांग्रेस के घोषणापत्र में किए वादे वही हैं जो पाकिस्तान चाहता है। महाराष्ट्र के लातूर में जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने मध्यप्रदेश में सीएम कमलनाथ के नजदीकियों के घर-दफ्तर पर मारे गए आयकर विभाग के छापों को लेकर निशाना साधा। उन्होंने कहा, आपने देखा होगा कल-परसों कांग्रेस के दरबारियों के घर से बक्सों में नोट निकली हैं, नोट से वोट खरीदने का यह पाप इनकी राजनैतिक संस्कृति रही है। यह पिछले ६ महीने से बोल रहे हैं चौकीदार चोर है लेकिन नोट कहां से निकले असली चोर कौन है? कांग्रेस पर बरसते हुए पीएम ने कहा कि कांग्रेस और उसके साथियों की देश विरोधी सोच है। उन्होंने कहा, कांग्रेस ने कहा कि जम्मू-कश्मीर से धारा ३७० किसी भी कीमत पर नहीं हटाई जाएगी। जो बात कांग्रेस का ढकोसला पत्र कह रहा है, वही भाषा पाकिस्तान बोल रहा है। कांग्रेस का कहना है कि जम्मू-कश्मीर में अराजकता फैलाने वालों से बातचीत करेंगे, पाकिस्तान भी यही कह रहा ताकि भारत इन्हीं बातों में उलझा रहे। कांग्रेस कह रही है कि हिंसा वाले इलाकों में सेना को मिले विशेष अधिकार वापस ले लेंगे। कांग्रेस ने घोषणा की है कि देश के टुकड़े करने वालों को खुला लाइसेंस देंगे, देशद्रोह का कानून खत्म करेंगे, पाकिस्तान भी यही चाहता है कि भारत के खिलाफ बातें करने वालों को खुली छुट मिल जाए। पीएम ने जम्मू-कश्मीर और पाकिस्तान पर की एयर स्ट्राइक पर किए गए सवालों को लेकर कांग्रेस की खूब आलोचना की। उन्होंने कहा, राष्ट्रवाद हमारी प्रेरणा है, अंत्योदय हमारा दर्शन है और कुशासन हमारा मंत्र है।

छत्तीसगढ़ : ५ जवान हुए शहीद

बीजेपी विधायक के काफिले पर नक्सलियों ने किया हमला

दंतेवाड़ा छत्तीसगढ की बस्तर लोकसभा क्षेत्र का इलाका है, यहां आगामी ११ अप्रैल को वोटिंग कराई जानी है

(संपूर्ण समाचार सेवा) रायपुर, छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा जिले में नक्सलियों ने एक बीजेपी विधायक के काफिले पर हमला किया है। दंतेवाड़ा में बीजेपी विधायक भीमा मंडावी के काफिले पर माओवादियों ने आईईडी हमला किया है। इस हमले में सुरक्षाबलों के ५ जवान शहीद हुए है, जिसके बाद इलाके को सीआरपीएफ और राज्य पुलिस के जवानों ने घेरा है। इस हमले में विधायक भीमा मंडावी के भी घायल होने की खबर है, हालांकि अब तक इसे लेकर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया गया है। दंतेवाड़ा छत्तीसगढ़ की बस्तर लोकसभा क्षेत्र का इलाका है और यहां पर आगामी ११ अप्रैल को वोटिंग कराई जानी है। शुरुआती जानकारी के अनुसार, हमला दंतेवाड़ा जिले के कुआंकोड़ा इलाके में उस वक्त हुआ जब विधायक का काफिला यहां से गुजर रहा था। आईईडी ब्लास्ट करके नक्सलियों ने विधायक के काफिले में शामिल सुरक्षाबलों के एक वाहन को निशाना बनाया, जिसमें ५ जवान गंभीर रूप से घायल होने के बाद शहीद हो गए। वहीं इस हमले के बाद काफिले में शामिल अन्य लोगों के बीच अफरा-तफरी मच गई। हमले के बाद सीआरपीएफ और राज्य पुलिस की टीमों को तत्काल मौके पर भेजा गया। आपको बता दें कि छत्तीसगढ़ में इससे पहले भी कई बार नक्सली हमलावरों ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों को निशाना बनाया था। जुलाई २०१८ में नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में बीएसएफ के जवानों पर हमला किया था, हमले में बीएसएफ के २ जवान शहीद हुए थे। इससे पहले १३ मार्च २०१८ को राज्य के सुकमा जिले में सीआरपीएफ की २१२वीं बटालियन के जवानों पर हमला हुआ था।

लोकसभा चुनाव : पहले चरण में ४०१ करोड़पति

सबसे अमीर के खिलाफ सबसे गरीब कैंडिडेट

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, लोकसभा चुनाव के पहले चरण में तेलंगाना की चेवेल्ला लोकसभा सीट का मुकाबला आंकड़ों के लिहाज से काफी दिलचस्प है। यहां सबसे अमीर कैंडिडेट के खिलाफ सबसे गरीब उम्मीदवार मैदान में है। इलेक्शन वॉच और असोसिएशन फॉर डेमोक्रैटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की रिपोर्ट के मुताबिक यहां से कांग्रेस उम्मीदवार कोंडा विश्वेश्वर रेड्डी के पास ८९५ करोड़ की संपत्ति है। वहीं, इसी सीट से चुनाव लड़ रहे नल्ला प्रेम कुमार ने हलफनामे में अपनी संपत्ति महज ५०० रुपये बताई है। एडीआर ने पहले चरण में चुनाव लड़ रहे १२७९ में से १२६६ उम्मीदवारों के शपथपत्रों का विश्लेषण किया है। इनमें से २२५ राष्ट्रीय पार्टियों से, १२४ राज्य स्तरीय दलों से, ३६४ गैर मान्यता प्राप्त दलों और ५५३ निर्दलीय उम्मीदवार शामिल हैं। चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों में से ४०१ (३२ प्रतिशत) करोड़पति हैं। एडीआर की रिपोर् के मुताबिक उम्मीदवारों की औसतन संपत्ति ६.६३ करोड़ रुपये है। चेवेल्ला सीट से कांग्रेस उम्मीदवार कोंडा विश्वेश्वर रेड्डी की चल संपत्ति ८५६ करोड़ और अचल संपत्ति ३८ करोड़ से ज्यादा है। उनकी कुल संपत्ति ८९५ करोड़ रुपये से ज्यादा है। वहीं, इस चरण में उन्हीं के खिलाफ उतरे नल्ला प्रेम कुमार (प्रेम जनता दल) की संपत्ति केवल ५०० रुपये है। पहले चरण में वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के कैंडिडेट प्रसाद वीरा पातेलुरी (विजयवाड़ा) ३४७ करोड़ से ज्यादा की संपत्ति के साथ दूसरे स्थान पर है। इलेक्शन वॉच की रिपोर्ट के मुताबिक यहां से कांग्रेस उम्मीदवार विश्वेश्वर रेड्डी के पास ८९५ करोड़ की संपत्ति वहीं, इसी पार्टी के के रघुराम कृष्ण राजू ३२५ करोड़ से ज्यादा की चल -अचल संपत्ति के साथ सबसे अमीर उम्मीदवारों की लिस्ट में तीसरे नंबर पर हैं। सबसे गरीब उम्मीदवार की लिस्ट में दूसरे नंबर पर ओडिशा की कोरापुट सीट से सीपीआई (एमएल) रेड स्टार के उम्मीदवार राजेंद्र केंद्रुका हैं,जिनकी चल संपत्ति सिर्फ ५६५ रुपये है। अचल संपत्ति के नाम पर उनके पास कुछ नहीं है। एडीआर की ओर से उम्मीदवारों के हलफनामे के विश्लेषण में पता चला है कि पहले चरण में ५ करोड़ से ज्यादा संपत्ति वाले १७७,२ करोड़ से ५ करोड़ की संपत्ति वाले ९९ और ५० लाख से २ करोड़ की संपत्ति वाले २५४ उम्मीदवार हैं।

अखिलेश यादव ने दी अपनी प्रतिक्रिया

गठबंधन से घबरा गई बीजेपी ३ बजे रात तक जाग रहे नेता

(संपूर्ण समाचार सेवा) हाथरस, उत्तर प्रदेश के हाथरस में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बीजेपी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि एसपी-बीएसपी-आएलडी गठबंधन से बीजेपी घबरा गई है और रात में तीन बजे तक जाग रहे है। इसलिए वे सुबह प्रचार नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बीजेपी के नेताओं को रात में इसलिए नींद नहीं आ रही क्योंकि यह महागठबंधन महामिलावट नहीं बल्कि यह महापरिवर्तन की आवाज है। उन्होंने कहा कि गठबंधन चौकीदार की चौकी छीन लेगा। अखिलेश ने कहा, आज सीमा पर जवान शहीद हो रहे है और उन्हें बुलेट प्रुफ जैकेट नहीं मिल पा रहा है। अमेरिका कह रहा है कि एफ-१६ विमान नहीं गिरा है। भारत का कहना है कि उसने एफ-१६ विमान का मार गिराया है। भारत की जनता यह सच जानना चाहती है कि क्या भारत की वायुसेना ने एफ-१६ गिराया है या नहीं। अगर भारत ने एफ-१६ को गिराया है तो अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप गले नहीं मिलेंगे। एसपी सुप्रीमो ने कहा कि जनता बीजेपी से पूछ रही है कि अच्छे दिन कहां है। उन्होंने कहा, पीएम मोदीॉ को अपने पांचॉ साल के साथ योगी बाबा के भी दो साल के कार्यकाल का भी हिसाब देना है। बीजेपी का संकल्प पत्र धोखा पत्र है। बीजेपी का संकल्प पत्र धोखा पत्र है। बीजेपी ने किसानों की आय दोगुनी करने वादा किया था और आलू खरीदने का वादा किया था लेकिन हुआ कुछ नहीं। अगर नोटबंदी की कोई उपलब्धि हो तो बीजेपी हमे बताए। काला धन बढ़ा और भ्रष्टाचार बढ़ा लेकिन किसान की आय नहीं बढ़ पाई।

संपादकिय

भाजपा का संकल्प-सुरक्षा, सुशासन और समृद्धि

आखिरकार भाजपा का भी घोषणापत्र आ गया जिसे उसने संकल्प पत्र का नाम दिया है। सुरक्षा, सुशासन और समृद्धि की आकांक्षाओं को पूरा करने का संकल्प लेने वाले इस घोषणापत्र में राम मंदिर के साथ अनुच्छेद–370 एवं 35–ए का जिक्र होने पर हैरानी नहीं। तीन तलाक, निकाह हलाला पर रोक भाजपा के नए मुद्दे हैं। उसने तीन तलाक के खिलाफ कानून बनाने की पहल कर इस सामाजिक बुराई को खत्म करने के प्रति अपनी गंभीरता भी प्रदर्शित की थी, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अनुच्छेद–370 और राम मंदिर के मामले में बीते पांच सालों में कोई ठोस पहल नहीं की गई। स्पष्ट है कि भाजपा को इस सवाल का सामना करना पड सकता है कि आखिर उसने राम मंदिर बनाने, कश्मीर से अनुच्छेद–370 हटाने और साथ ही वहां कश्मीरी पंडितों को फिर से बसाने का लिए क्या किया ? इस पर भी सवाल उठ सकता है कि उसने समान नागरिक संहिता को लेकर भी कोई प्रयत्न क्यों नहीं किया ? ऐसे ही सवाल का सामना उसे संसद में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के वादे पर भी करना पड सकता है। अच्छा होगा कि भाजपा अब यह भी बताए कि सत्ता में रहते समय वह अपने कुछ चुनिंदा वादों को क्यों नहीं पूरा कर सकी ? यह अच्छी बात है कि भाजपा ने शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने पर. जोर देने का वादा किया है, लेकिन इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि पांच साल बीत गए, मगर नई शिक्षा नीति सामने नहीं आ सकी। भाजपा के संकल्प पत्र में कृषि और किसानों का उल्लेख होना स्वाभाविक है। कोई भी राजनीतिक दल हो वह आज किसानों की अनदेखी करने की स्थिति में नहीं। भाजपा ने कुछ शर्तों के साथ किसान क्रेडिट कार्ड पर पांच साल तक एक लाख रुपये का कर्ज बिना ब्याज के देने का एक ब ?ा वादा किया है। इसके अतिरिक्त किसानों और व्यापारियों को पेंशन देने का वादा भी खासा उल्लेखनीय है। यह बाजी पलटने वाला वादा बनने के साथ कांग्रेस की न्याय नामक योजना का जवाब भी हो सकता है। इस घोषणा के साथ भाजपा ने एक साथ दो ब ? मतदाता समूहों की नाराजगी दूर करने के साथ ही उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने की पहल की है। निस्संदेह इस घोषणा के अतिरिक्त उसके कुछ और भी ऐसे वादे हैं जिन्हें लोक–लुभावन घोषणाओं की संज्ञा दी जा सकती है। अपनी इन घोषणाओं के संदर्भ में भाजपा को इस सवाल का जवाब देने के लिए तैयार रहना चाहिए कि इन वादों को पूरा करने के लिए धन का प्रबंध कहां से होगा ? यह हास्यास्पद है कि भाजपा के घोषणापत्र को झूठ का पुलिंदा करार देने वाली कांग्रेस अपना घोषणापत्र जारी करने के एक सप्ताह बाद भी यह नहीं बता पा रही है कि वह अपने लोक–लुभावन वादों को जमीन पर उतारने के लिए धन का जुगाड कहां से करेगी ? वैसे यह अच्छा है कि दोनों राजनीतिक दल एक–दूसरे के घोषणापत्रों के वादों पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं। यह सिलसिला कायम रहे तो बेहतर, क्योंकि इससे आम जनता को चुनावी वादों का आकलन करने और अपनी समझ बनाने में आसानी होगी।

सैकडों उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण करके साबित किया– इसरो

(जी.एन.एस.) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो ने देश–दुनिया के सैकडों उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण करके साबित किया है कि तेजी से बडते अंतरिक्ष बाजार में अब उसका कोई मुकाबला नहीं है, पर जब बात दुश्मन देशों से अपनी रक्षा करने और आतंकवाद से लोहा लेने की हो तो उसमें भी इसरो के उपग्रहों की एक शानदार भूमिका हो सकती है–यह बात हाल में (26 फरवरी, 2019 को) पाकिस्तान स्थित बालाकोट में आतंकी संगठन जैश–ए–मोहम्मद के प्रशिक्षण शिविर पर भारतीय हवाई हमले से साबित हुई है। इसे लेकर भले ही पाकिस्तान और अपने देश में विपक्षी दल यह विवाद खडे कर रहे हों कि इस हमले में भारत सरकार मारे गए आतंकियों की सही संख्या नहीं बता पा रही है, पर जिन्हें वायुसेना और खास तौर से इसरो की काबिलियत पर भरोसा है, वे जानते हैं कि मिराज–2000 विमानों से रात के अंधेरे में किए गए इन हवाई हमलों की सटीकता कितनी अधिक रही होगी। जब कभी दो पडोसी देशों के बीच सैन्य ताकत की तुलना होती है तो अक्सर यह सैनिकों की तादाद के अलावा लडाकू विमानों, जंगी जहाजों, टैंकों और मिसाइलों और मारक क्षमता तक सीमित रह जाती है। इसमें विज्ञान के उन दूसरे क्षेत्रों की तरक्की को नहीं जोडा जाता है, जिनकी मदद से किसी भी आकलन और हमले की स्थिति में देश को बडत हासिल होती है। वस्तुतः भारत की सैन्य तैयारियों के संबंध में आज यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लडाकू विमान, टैंक–तोपें और जंगी जहाज ही नहीं, बल्कि आसमान में तैनात इसके दर्जनों उपग्रह इसे ऐसी ताकत दे रहे हैं जिसका कोई मुकाबला पाकिस्तान हरगिज नहीं कर सकता है। आसमान में हर वक्त चौकसी कर रहे इसरो के उपग्रह प ?ासी मुल्क के चप्पे–चप्पे की खबर रख रहे हैं। यही नहीं, अब तो यह दावा भी किया जा रहा है कि भारत अपने उपग्रहों के जरिए पाकिस्तान के 87 फीसद क्षेत्र यानी कुल 8.8 लाख वर्ग किलोमीटर में से 7.7 लाख वर्ग किलोमीटर इलाके पर पैनी नजर रखने में सक्षम हो गया है। इससे भारत जब चाहे, पाकिस्तान के सामरिक इलाकों की गतिविधियों को देख सकता है और अपने उपग्रहों के जरिये महत्वपूर्ण नक्शे और तस्वीरें हासिल कर सकता है। वैसे तो अन्य स्पेस एजेंसी की तरह ही इसरो को दूरसंचार और मौसम की जानकारी लेने वाले उपग्रहों की तैनाती के लिए

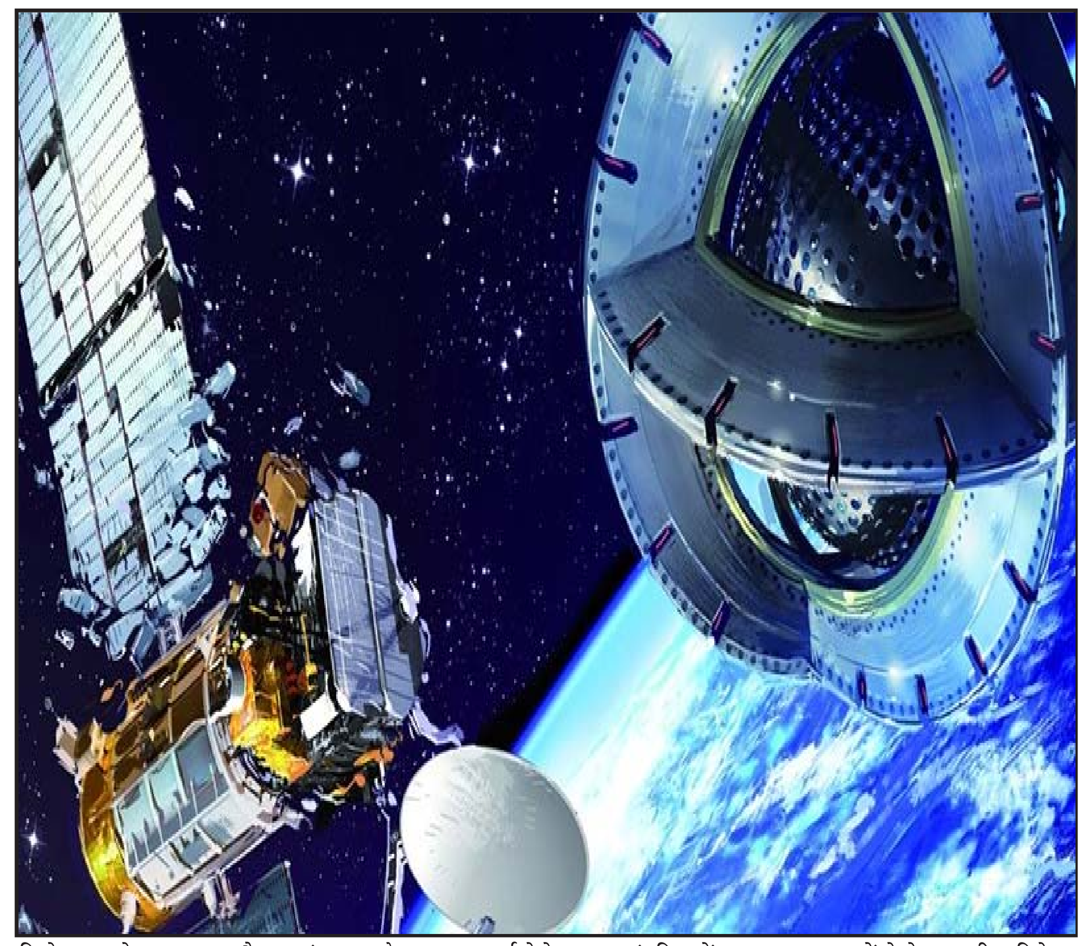

विशेष रूप से जाना जाता है। दूरसंचार यानी टेलीविजन और टेलीफोन आदि जरूरतों के लिए इसरो ने कई उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं। इनके बाद प्राकृतिक आपदाओं की सूचना आदि की जानकारी संबंधी आवश्यकताओं के मद्देनजर इसरो ने उपग्रहों का एक नेटवर्क तैनात किया है जो बदलते मौसम की सूचनाएं मुहैया कराते हैं और इनकी मदद से भारतीय मौसम विभाग तमाम जानकारियां संबंधित क्षेत्रों को जारी करता है। इसी तरह विदेशी नेविगेशन सिस्टम को मुकाबला देने के लिए इसरो स्वदेशी जीपीएस के लिए भी अपने उपग्रहों का नेटवर्क तैयार कर रहा है, पर इन चीजों के अलावा आज महत्व सैन्य और जासूसी के मकसद से उपग्रहों की सेवाएं लेने का भी है। इस नजरिये से देखें तो पिछले पांच–छह वर्षों में इसरो ने कई ऐसे सैटेलाइट अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं, जिनकी मदद से भारत की क्षमता आस–पडोस के 14 देशों के करीब साडे 5 करोड वर्ग किलोमीटर दायरे वाले भूभाग पर सूक्ष्म नजर रखने की हो चुकी है। असल में बीते करीब आधे दशक में इसरो ने एक के बाद एक कई ऐसे उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं जो अपने ताकतवर उपकरणों की सहायता से जमीन का कोना–कोना खंगालते रहते हैं। खुद सेना यह स्वीकार करती है कि देश की सरहदों से लेकर पडोसी मुल्कों की जमीन पर हो रही गतिविधियों पर करीबी नजर रखने संबंधी जरूरतों का 70 फीसद हिस्सा इसरो के सैटेलाइट पूरा कर देते हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस वक्त इसरो के कम से कम 10 उपग्रह ऐसे हैं जो देश की सैन्य और खुफिया जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। इनमें खास तौर से कार्टोसैट सीरीज, जीसैट–7, जीसैट–7 ए, आइआर एनएसएस यानी इंडियन रीजनल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम, माइक्रोसैट, आरआइसैट और हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग यानी हाइसिस सैटेलाइट का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि उडी हमले के उपरांत सितंबर 2016 में जब भारत की ओर से नियंत्रण रेखा पार कर भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया था तो उसमें एक अहम रोल कार्टोसैट सीरीज के उपग्रहों ने निभाया था। इन उपग्रहों से बेहद बारीक डिटेल्स के साथ फोटो उपलब्ध कराए गए थे, जिनके विश्लेषण के बाद सेना को जमीनी हालात का आकलन करने और हमले की सर्वाधिक उपयुक्त जगह एवं समय का चुनाव करने में मदद मिली थी।वैसे तो कार्टोसैट सीरीज की शुरुआत वर्ष 2005 में ही हो गई थी, लेकिन सैन्य महत्व के उपग्रहों के सिलसिले की बात करें तो इसका आरंभ वर्ष 2007 में कार्टोसैट–2ए के प्रक्षेपण से हुआ था। यह दोहरे उपयोग वाला उपग्रह था जो मौसम की जानकारियां बटोरने के साथ भारत के अडोस–पडोस में मिसाइलों के हर मूवमेंट पर नजर रख सकता था। इसके बाद जून 2012 में छो ? गए कार्टोसैट–2सी से प ?ासी देशों के संवेदनशील ठिकानों के वीडियो रिकॉर्ड करने और उसका विश्लेषण कर उन्हें वापस धरती पर भेजने की सुविधा देश को मिल गई। इसी सीरीज में अगला उपग्रह कार्टोसैट–2ई था जो जून 2017 में छोडा गया। इनके अलावा कई अन्य सैटेलाइट और हैं जिनसे दूसरे किस्म की बेहद जरूरी और संवेदनशील सूचनाएं देश और सेना को मिलती हैं।

जैसे एक जुलाई 2013 और 12 अप्रैल, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए आइआरएनएसएस सीरीज के उपग्रहों से देश की सरहद के 1600 किलोमीटर इलाके की बारीक निगरानी की जाती है और विशेष मिसाइलों की तैनाती और उनके मूवमेंट की थाह इनके जरिये ली जाती है। इसी तरह 30 अगस्त, 2013 को प्रक्षेपित जीसैट–7 से भारतीय नौसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें और समुद्री सीमा की निगरानी करने में बहुत मदद मिलती है। इसके बाद 19 दिसंबर, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए जीसैट–7ए से भारतीय वायुसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें पूरा करने में बहुत मदद मिली। यह एक बेहद उच्च क्षमता वाला सैन्योपयोगी उपग्रह है जो मिसाइलों और विमानों की हलचलों पर बारीक नजर रखने के साथ–साथ उड रहे विमानों के बीच हो रहे संवाद–संचार को पकड सकता है और फौरन उसकी जानकारी जमीन पर मौजूद सेंटर को दे सकता है। यह ड्रोन को कंट्रोल करते हुए उन्हें दुश्मन के इलाके में हमले के लिए भेज सकता है और दुश्मन के ड्रोन पर नजर भी रख सकता है। हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग सैटेलाइट यानी हाइसिस को 28 नवंबर, 2018 को छोडा गया था और इससे रात के अंधेरे में भी तस्वीरें खींचकर जमीन के कुछ सेंटीमीटर जितने हिस्से की सूक्ष्म निगरानी की जा सकती है। यहां तक कि जमीन में दबाई गई बारूदी सुरंगों और आईईडी का भी हाइसिस से पता लगाया जा सकता है। इनके अलावा इसी साल 23 जनवरी, 2019 को प्रक्षेपित उपग्रह माइक्रोसैट–आर को इस मायने में खास कहा जा सकता है कि इसका निर्माण विशुद्ध रूप से सैन्य उद्देश्यों के लिए डीआरडीओ ने किया है। यह एक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है यानी इससे जमीनी हलचलों की बेहद सूक्ष्म जानकारी ली जा सकती है। यह उपग्रह सेना को हालात के मुताबिक योजना बनाने और दुश्मन की गतिविधि की निगरानी करने में मदद देता है। जब कभी दो पडोसी देशों के बीच सैन्य ताकत की तुलना होती है तो अक्सर यह सैनिकों की तादाद के अलावा लडाकू विमानों, जंगी जहाजों, टैंकों और मिसाइलों और मारक क्षमता तक सीमित रह जाती है। इसमें विज्ञान के उन दूसरे क्षेत्रों की तरक्की को नहीं जोडा जाता है, जिनकी मदद से किसी भी आकलन और हमले की स्थिति में देश को बडत हासिल होती है। वस्तुतः भारत की सैन्य तैयारियों के संबंध में आज यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लडाकू विमान, टैंक–तोपें और जंगी जहाज ही नहीं, बल्कि आसमान में तैनात इसके दर्जनों उपग्रह इसे ऐसी ताकत दे रहे हैं जिसका कोई मुकाबला पाकिस्तान हरगिज नहीं कर सकता है। आसमान में हर वक्त चौकसी कर रहे इसरो के उपग्रह पडोसी मुल्क के चप्पे–चप्पे की खबर रख रहे हैं। यही नहीं, अब तो यह दावा भी किया जा रहा है कि भारत अपने उपग्रहों के जरिए पाकिस्तान के 87 फीसद क्षेत्र यानी कुल 8.8 लाख वर्ग किलोमीटर में से 7.7 लाख वर्ग किलोमीटर इलाके पर पैनी नजर रखने में सक्षम हो गया है। इससे भारत जब चाहे, पाकिस्तान के सामरिक इलाकों की गतिविधियों को देख सकता है और अपने उपग्रहों के जरिये महत्वपूर्ण नक्शे और तस्वीरें हासिल कर सकता है। वैसे तो अन्य स्पेस एजेंसी की तरह ही इसरो को दूरसंचार और मौसम की जानकारी लेने वाले उपग्रहों की तैनाती के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। दूरसंचार यानी टेलीविजन और टेलीफोन आदि जरूरतों के लिए इसरो ने कई उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं। इनके बाद प्राकृतिक आपदाओं की सूचना आदि की जानकारी संबंधी आवश्यकताओं के मद्देनजर इसरो ने उपग्रहों का एक नेटवर्क तैनात किया है जो बदलते मौसम की सूचनाएं मुहैया कराते हैं और इनकी मदद से भारतीय मौसम विभाग तमाम जानकारियां संबंधित क्षेत्रों को जारी करता है। इसी तरह विदेशी नेविगेशन सिस्टम को मुकाबला देने के लिए इसरो स्वदेशी जीपीएस के लिए भी अपने उपग्रहों का नेटवर्क तैयार कर रहा है, पर इन चीजों के अलावा आज महत्व सैन्य और जासूसी के मकसद से उपग्रहों की सेवाएं लेने का भी है। इस नजरिये से देखें तो पिछले पांच–छह वर्षों में इसरो ने कई ऐसे सैटेलाइट अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं, जिनकी मदद से भारत की क्षमता आस–पडोस के 14 देशों के करीब साडे 5 करोड वर्ग किलोमीटर दायरे वाले भूभाग पर सूक्ष्म नजर रखने की हो चुकी है। असल में बीते करीब आधे दशक में इसरो ने एक के बाद एक कई ऐसे उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं जो अपने ताकतवर उपकरणों की सहायता से जमीन का कोना–कोना खंगालते रहते हैं। खुद सेना यह स्वीकार करती है कि देश की सरहदों से लेकर पडोसी मुल्कों की जमीन पर हो रही गतिविधियों पर करीबी नजर रखने संबंधी जरूरतों का 70 फीसद हिस्सा इसरो के सैटेलाइट पूरा कर देते हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस वक्त इसरो के कम से कम 10 उपग्रह ऐसे हैं जो देश की सैन्य और खुफिया जरूरतों को पूरा कर रहे हैं।

इनमें खास तौर से कार्टोसैट सीरीज, जीसैट–7, जीसैट–7 ए, आइआरएनएसएस यानी इंडियन रीजनल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम, माइक्रोसैट, आरआइसैट और हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग यानी हाइसिस सैटेलाइट का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि उडी हमले के उपरांत सितंबर 2016 में जब भारत की ओर से नियंत्रण रेखा पार कर भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया था तो उसमें एक अहम रोल कार्टोसैट सीरीज के उपग्रहों ने निभाया था। इन उपग्रहों से बेहद बारीक डिटेल्स के साथ फोटो उपलब्ध कराए गए थे, जिनके विश्लेषण के बाद सेना को जमीनी हालात का आकलन करने और हमले की सर्वाधिक उपयुक्त जगह एवं समय का चुनाव करने में मदद मिली थी।वैसे तो कार्टोसैट सीरीज की शुरुआत वर्ष 2005 में ही हो गई थी, लेकिन सैन्य महत्व के उपग्रहों के सिलसिले की बात करें तो इसका आरंभ वर्ष 2007 में कार्टोसैट–2ए के प्रक्षेपण से हुआ था। यह दोहरे उपयोग वाला उपग्रह था जो मौसम की जानकारियां बटोरने के साथ भारत के अडोस–पडोस में मिसाइलों के हर मूवमेंट पर नजर रख सकता था। इसके बाद जून 2012 में छोडे गए कार्टोसैट–2सी से पडोसी देशों के संवेदनशील ठिकानों के वीडियो रिकॉर्ड करने और उसका विश्लेषण कर उन्हें वापस धरती पर भेजने की सुविधा देश को मिल गई। इसी सीरीज में अगला उपग्रह कार्टोसैट–2ई था जो जून 2017 में छोडा गया। इनके अलावा कई अन्य सैटेलाइट और हैं जिनसे दूसरे किस्म की बेहद जरूरी और संवेदनशील सूचनाएं देश और सेना को मिलती हैं। जैसे एक जुलाई 2013 और 12 अप्रैल, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए आइआरएनएसएस सीरीज के उपग्रहों से देश की सरहद के 1600 किलोमीटर इलाके की बारीक निगरानी की जाती है और विशेष मिसाइलों की तैनाती और उनके मूवमेंट की थाह इनके जरिये ली जाती है। इसी तरह 30 अगस्त, 2013 को प्रक्षेपित जीसैट–7 से भारतीय नौसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें और समुद्री सीमा की निगरानी करने में बहुत मदद मिलती है। इसके बाद 19 दिसंबर, 2018 को अंतरिक्ष में भेजे गए जीसैट–7ए से भारतीय वायुसेना को अपनी संचार संबंधी जरूरतें पूरा करने में बहुत मदद मिली। हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजिंग सैटेलाइट यानी हाइसिस को 28 नवंबर, 2018 को छोडा गया था और इससे रात के अंधेरे में भी तस्वीरें खींचकर जमीन के कुछ सेंटीमीटर जितने हिस्से की सूक्ष्म निगरानी की जा सकती है। यहां तक कि जमीन में दबाई गई बारूदी सुरंगों और आईईडी का भी हाइसिस से पता लगाया जा सकता है। इनके अलावा इसी साल 23 जनवरी, 2019 को प्रक्षेपित उपग्रह माइक्रोसैट–आर को इस मायने में खास कहा जा सकता है कि इसका निर्माण विशुद्ध रूप से सैन्य उद्देश्यों के लिए डीआरडीओ ने किया है। यह एक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है यानी इससे जमीनी हलचलों की बेहद सूक्ष्म जानकारी ली जा सकती है। यह उपग्रह सेना को हालात के मुताबिक योजना बनाने और दुश्मन की गतिविधि की निगरानी करने में मदद देता है। जब कभी दो पडोसी देशों के बीच सैन्य ताकत की तुलना होती है तो अक्सर यह सैनिकों की तादाद के अलावा लडाकू विमानों, जंगी जहाजों, टैंकों और मिसाइलों और मारक क्षमता तक सीमित रह जाती है। इसमें विज्ञान के उन दूसरे क्षेत्रों की तरक्की को नहीं जोडा जाता है, जिनकी मदद से किसी भी आकलन और हमले की स्थिति में देश को बडत हासिल होती है। वस्तुतः भारत की सैन्य तैयारियों के संबंध में आज यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि लडाकू विमान, टैंक–तोपें और जंगी जहाज ही नहीं, बल्कि आसमान में तैनात इसके दर्जनों उपग्रह इसे ऐसी ताकत दे रहे हैं जिसका कोई मुकाबला पाकिस्तान हरगिज नहीं कर सकता है। आसमान में हर वक्त चौकसी कर रहे इसरो के उपग्रह पडोसी मुल्क के चप्पे–चप्पे की खबर रख रहे हैं।यह एक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है यानी इससे जमीनी हलचलों की बेहद सूक्ष्म जानकारी ली जा सकती है। यह उपग्रह सेना को हालात के मुताबिक योजना बनाने और दुश्मन की गतिविधि की निगरानी करने में मदद देता है। जब कभी दो पडोसी देशों के बीच सैन्य ताकत की तुलना होती है तो अक्सर यह सैनिकों की तादाद के अलावा लडाकू विमानों, जंगी जहाजों, टैंकों और मिसाइलों और मारक क्षमता तक सीमित रह जाती है। आसमान में तैनात इसरो के इन उपग्रहों के संजाल को देखते हुए यदि यह कहा जाए कि इस वक्त देश दुश्मन मुल्क के हर संदिग्ध ठिकाने तक में झांकने की हैसियत रखता है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस क्षमता के आधार पर यह दावा भी उचित ही लगता है कि 28 फरवरी, 2019 को पाकिस्तान के बालाकोट में आतंकी प्रशिक्षण शिविर पर हमारी वायुसेना ने जो हमला किया, वह न केवल बेहद सटीक था, बल्कि इतना संहारक था कि उससे दुश्मन देश के होश ठिकाने आ गए।

कार्टोसैट मौसम की जानकारियां बटोरने के साथ भारत के अडोस–पडोस में मिसाइलों के हर मूवमेंट पर नजर रखता है

(जी.एन.एस.)बालाकोट में भारतीय वायुसेना की साहसिक और पाकिस्तान के साथ दुनिया को हैरान कर देने वाली कार्रवाई के बाद जब खिसियाई पाकिस्तानी वायुसेना ने भारत पर पलटवार किया तब सोशल मीडिया में इस तरह की मांग जोर–शोर से छिडी कि जंग के लिए न कहें– से नो टू वार। जंग से बचने की मांग करने में कुछ भी गलत नहीं। जंग से मसले हल होने की गारंटी नहीं, लेकिन इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कभी–कभी ऐसे हालात भी बन जाते हैं जब जंग से बचना मुश्किल हो जाता है। शायद 1971 में ऐसा ही हुआ था। इस सबके बावजूद जंग से बचने की हर संभव कोशिश होनी चाहिए–इसलिए और भी, क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच जंग छिडने की स्थिति में उसके बेलगाम हो जाने का खतरा है। इस खतरे की अनदेखी करना ठीक नहीं, लेकिन क्या हम इसकी अनदेखी कर दें कि कश्मीर में एक जंग पहले से जारी है। देश के इस हिस्से में पाकिस्तान पोषित और प्रायोजित आतंकवाद को छद्म युद्ध की संज्ञा दी जाती है, लेकिन छद्म युद्ध का यह मतलब नहीं कि यह युद्ध के मुकाबले कम गंभीर है। इसकी गंभीरता को इससे समझा जा सकता है कि पुलवामा में भीषण आतंकी हमले में 40 सीआरपीएफ जवानों की शहादत के बाद से कम से कम एक दर्जन जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना बलिदान दे चुके हैं। पुलवामा हमले में शामिल रहे आतंकी के साथियों को मार गिराने में पुलवामा में ही मेजर विभूति कुमार ढौंडियाल समेत पांच जवान खेत रहे। उनकी शहादत का समाचार तब आया जब उनके गृहराज्य उत्तराखंड में शहीद मेजर चित्रेश बिष्ट के अंतिम संस्कार की तैयारी हो रही थी। चित्रेश भी कश्मीर में शहीद हुए थे। इसके चंद दिनों बाद हंदवाडा में सीआरपीएफ के एक इंस्पेक्टर समेत पांच जवानों को बलिदान देना पडा।कश्मीर में 1989–90 से ही पाकिस्तान की ओर से थोपा गया भीषण छद्म युद्ध जारी है। छिपकर और छल से लडा जाने वाला यह छद्म युद्ध भारत के

लिए कितना महंगा और एक तरह से युद्ध सरीखा साबित हो रहा, इसे इससे समझा जा सकता है कि बीते तीस सालों यानी 1989 से लेकर 24 फरवरी 2019 तक कश्मीर में सेना, अर्धसैनिक सुरक्षा बलों और जम्मू–कश्मीर पुलिस के छह हजार से अधिक जवानों को बलिदान देना पडा है। ये सब जवान आतंकी हिंसा का शिकार हुए हैं। यह एक बडी संख्या है। इतनी बडी संख्या में जवानों की शहादत तो यही कहती है कि कश्मीर में युद्ध जैसे हालात कायम हैं।क्या इस छद्म युद्ध के लिए ऐसा कुछ अभियान चला–से नो टू प्रॉक्सी वारड आखिर युद्ध की चिंता में कश्मीर में तबाही मचा रहे छद्म युद्ध को ओझल कर देना कहां तक उचित है ? पाकिस्तान कश्मीर में यह छद्म युद्ध इसीलिए छडे हुए है, क्योंकि वह आमने–सामने की लडाई में भारत के सामने टिक नहीं कह सकता। यह छद्म युद्ध उसे सस्ता पड रहा है, क्योंकि इसके लिए उसे जो उन्मादी जिहादी चाहिए वे पाकिस्तान में बहुतायत से उपलब्ध हैं। जैश और लश्कर सरीखे आतंकी संगठन केवल पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ के संरक्षण में आतंकियों के प्रशिक्षण शिविर ही नहीं, बल्कि ऐसे मदरसे भी चलाते हैं जहां से भविष्य के लिए आतंकी हासिल किए जा सकें। पाकिस्तान को आतंकियों–जेहादियों की भारत में घुसपैठ भर करानी पडती है। इस खतरे की अनदेखी करना ठीक नहीं, लेकिन क्या हम इसकी अनदेखी कर दें कि कश्मीर में एक जंग पहले से जारी है। देश के इस हिस्से में पाकिस्तान पोषित और प्रायोजित आतंकवाद को छद्म युद्ध की संज्ञा दी जाती है, लेकिन छद्म युद्ध का यह मतलब नहीं कि यह युद्ध के मुकाबले कम गंभीर है। इसकी गंभीरता को इससे समझा जा सकता है कि पुलवामा में भीषण आतंकी हमले में 40 सीआरपीएफ जवानों की शहादत के बाद से कम से कम एक दर्जन जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना बलिदान दे चुके हैं। पुलवामा हमले में शामिल रहे आतंकी के साथियों को मार गिराने में पुलवामा में ही मेजर विभूति कुमार ढौंडियाल समेत पांच जवान खेत रहे। उनकी शहादत का समाचार तब आया जब उनके गृहराज्य उत्तराखंड में शहीद मेजर चित्रेश बिष्ट के अंतिम संस्कार की तैयारी हो रही थी। चित्रेश भी कश्मीर में शहीद हुए थे। इसके चंद दिनों बाद हंदवाडा में सीआरपीएफ के एक इंस्पेक्टर समेत पांच जवानों को बलिदान देना पडा।कश्मीर में 1989–90 से ही पाकिस्तान की ओर से थोपा गया भीषण छद्म युद्ध जारी है। छिपकर और छल से लडा जाने वाला यह छद्म युद्ध भारत के लिए कितना महंगा और एक तरह से युद्ध सरीखा साबित हो रहा, इसे इससे समझा जा सकता है कि बीते तीस सालों यानी 1989 से लेकर 24 फरवरी 2019 तक कश्मीर में सेना, अर्धसैनिक सुरक्षा बलों और जम्मू–कश्मीर पुलिस के छह हजार से अधिक जवानों को बलिदान देना पडा है। ये सब जवान आतंकी हिंसा का शिकार हुए हैं। यह एक बडी संख्या है। इतनी बडी संख्या में जवानों की शहादत तो यही कहती है कि कश्मीर में युद्ध जैसे हालात कायम हैं।क्या इस छद्म युद्ध के लिए ऐसा कुछ अभियान चला–से नो टू प्रॉक्सी वारड आखिर युद्ध की चिंता में कश्मीर में तबाही मचा रहे छद्म युद्ध को ओझल कर देना कहां तक उचित है ? इन पाकिस्तान पोषित और प्रशिक्षित आतंकियों की घुसपैठ के लिए ही सीमा पर गोलाबारी होती है। जब भारत की ओर से इस गोलाबारी का जवाब दिया जाता है तो सीमांत इलाके युद्ध जैसे हालत से दो–चार होते दिखते हैं। इस दौरान सीमांत इलाकों में रहने वालों के लिए बेहिसाब मुश्किलें खडी हो जाती हैं। उनके घर–बार नष्ट हो जाते हैं। उनके मवेशी मारे जाते हैं और कभी–कभी तो लोगों को भी पाकिस्तान की ओर से होने वाली गोलाबारी का शिकार होना पडता है। इस गोलाबारी में होने वाली जन–धन की हानि का तो शायद कभी अंदाजा भी नहीं लगाया गया। सीमा पर तनाव की स्थिति में सीमांत क्षेत्र के लोगों को अक्सर ही सुरक्षित स्थानों में ले जाना प ?ता है। इसी कारण जम्मू और कश्मीर के सीमांत इलाकों में बंकर बनाने का काम जारी ही रहता है। अकेले पुंछ और राजौरी के सीमांत इलाकों में दो–दो सौ और बंकर बनाने की तैयारी हो रही है। समझना कठिन है कि कश्मीर में ऐसे विकट हालात के बाद भी ऐसी कोई योजना क्यों नहीं बनी ताकि पाकिस्तान से लगती सीमा पर रह रहे लोगों को स्थाई रूप से सीमा से दूर बसाया जा सके। ऐसी कोई योजना इसलिए बननी चाहिए, क्योंकि कभी–कभार हजारों लोगों को उनके घरों से निकालकर सुरक्षित इलाकों में ले जाना पडता है। आखिर यह स्थिति युद्ध के हालात से अलग कैसे है ? जैसे जम्मू और कश्मीर के सीमांत इलाकों के लोगों को सीमा से दूर सुरक्षित इलाकों में बसाने की कोई योजना नहीं बनाई जा सकी वैसे ही पाकिस्तान से लगती सीमा को वास्तव में अभेद्य भी नहीं बनाया जा सका। सीमाओं के अभेद्य न होने के कारण ही आतंकियों को भारत में घुसपैठ करने में आसानी होती है। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि पाकिस्तान प्रायोजित छद्म युद्ध से ढंग से निपटने के बारे में कभी सोचा ही नहीं गया। कम से कम अब तो बिना किसी देरी के सोचा ही जाना चाहिए, क्योंकि हम अपने जवानों के बलिदान का सिलसिला इसी तरह कायम रहते हुए नहीं देख सकते। यदि तत्काल धारा 370 के बारे में पुनर्विचार नहीं हो सकता तो कम से कम जम्मू और कश्मीर के सीमावर्ती इलाके की आबादी को तो वहां से हटाने का काम किया ही जा सकता है। केवल इतना ही पर्याप्त नहीं होगा। इसी के साथ पाकिस्तान से लगती सीमा से कम से कम चार–छह किलोमीटर इलाके को केंद्र शासित क्षेत्र का दर्जा देकर ऐसी व्यवस्था करनी होगी ताकि सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ सचमुच मुश्किल हो जाए। वे घुस भी आएं तो उन्हें सीमांत इलाकों में छिपने–शरण लेने की कोई जगह न मिले। सीमांत इलाके को केंद्र शासित प्रदेश घोषित करने के बाद अगला कदम कश्मीर में आबादी के असंतुलन को दूर करने का होना चाहिए। कश्मीर केवल किसी एक समुदाय का नहीं है और न हो सकता है। हमारे नीति–नियंताओं को यह समझना ही होगा कि जितनी जरूरत पाकिस्तान के खिलाफ कुछ ठोस कदम उठाने की है उतनी ही कश्मीर में भी हालात सुधारने के लिए भी कुछ करने की है और वहां के हालात तब सुधरेंगे जब उन कश्मीरियों का मुगालता दूर होगा जो जोर–जबरदस्ती या फिर पाकिस्तान की मदद से आजादी हासिल कर सकते हैं। यह समझा जाना चाहिए कि जब तक पाकिस्तान कश्मीर में दखल देने की स्थिति में रहेगा वह भारत को चैन नहीं लेने देगा।

दिलीप वेंगसरकर ने दी अपनी प्रतिक्रिया

आईपीएल के आधार पर विराट कोहली के बारे में राय बनाना गलत

कोहली की कप्तानी वाली टीम रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर आईपीएल के १२वें एडिशन में लगातार ६ मैच हार चुकी

(संपूर्ण समाचार सेवा) पणजी,

पूर्व भारतीय कप्तान और मुख्य चयनकर्ता रहे दिलीप वेंगसरकर का मानना है कि विराट कोहली को उनके आईपीएल प्रदर्शन के आधार पर परखना सही नहीं है। विराट कोहली की कप्तानी वाली टीम रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर आईपीएल के १२वें एडिशन में लगातार ६ मैच हार चुकी है और अभी तक उसका जीत का खाता नहीं खुला है। वेंगसरकर ने कहा, आईपीएल में प्रदर्शन किसी भी खिलाड़ी के बारे में राय बनाने के लिए सही नहीं हो सकता। विराट शानदार फॉर्म में हैं वह दिग्गज बल्लेबाजों में से एक हैं। कप्तान के तौर पर वह लगातार निखर रहे हैं। जब आप उन पर भरोसा करते हैं तो आपको शत प्रतिशत ऐसा करना होता है। गोवा पहुंचे इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा, विराट ने टेस्ट और वनडे में भी शानदार प्रदर्शन किया है। इससे पहले विराट की कप्तानी में टीम इंडिया को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे और टी२० सीरीज में शिकस्त झेलनी पड़ी थी। वर्ल्डकप को लेकर वेंगसरकर ने कहा, भारत के पास अंतिम-४ में पहुंचने का मौका है। हमारे पास सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी आक्रमण है। यदि हम पिछली टीमों से अपने मौजूदा बोलिंग अटैक की तुलना करें तो यह उससे भी अच्छा है। इसी कारण हम सभी को उम्मीद है। विराट कोहली की कप्तानी वाली टीम रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर आईपीएल के १२वें एडिशन में लगातार ६ मैच हार चुकी है और अभी तक उसका जीत का खाता नहीं खुला है। वेंगसरकर ने कहा, आईपीएल में प्रदर्शन किसी भी खिलाड़ी के बारे में राय बनाने के लिए सही नहीं हो सकता। विराट शानदार फॉर्म में हैं वह दिग्गज बल्लेबाजों में से एक हैं। कप्तान के तौर पर वह लगातार निखर रहे हैं। जब आप उन पर भरोसा करते हैं तो आपको शत प्रतिशत ऐसा करना होता है। गोवा पहुंचे इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा, विराट ने टेस्ट और वनडे में भी शानदार प्रदर्शन किया है। वराट शानदार फॉर्म में हैं वह दिग्गज बल्लेबाजों में से एक हैं। कप्तान के तौर पर वह लगातार निखर रहे हैं। जब आप उन पर भरोसा करते हैं तो आपको शत प्रतिशत ऐसा करना होता है। गोवा पहुंचे इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा, विराट ने टेस्ट और वनडे में भी शानदार प्रदर्शन किया है।इससे पहले विराट की कप्तानी में टीम इंडिया को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे और टी२० सीरीज में शिकस्त झेलनी पड़ी थी। जब भारत का प्रदर्शन खराब रहा तो वह अंतिम -१० ओवरों के कारण रहा लेकिन बुमराह और अन्य गेंदबाजों के होने की वजह से अब वह पुरानी बात लगती है। उन्होंने साथ ही कहा कि एक टूर्नमेंट में केवल विराट और रोहित शर्मा के भरोसे नहीं रहा जा सकता। वेंगसरकर ने कहा कि नंबर-४ के लिए केएल राहुल और अजिंक्य रहाणे विकल्प हो सकते हैं। इनके अलावा मयंक अग्रवाल भी हैं जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया में अच्छा प्रदर्शन किया था।

ऐक्ट्रेस आलिया भट्ट ने बताया

पाक सीरियल देखकर आलिया भट्ट ने की कलंक की तैयारी

(संपूर्ण समाचार सेवा) मुंबई,

ऐक्ट्रेस आलिया भट्ट ने बताया है कि फिल्म कलंक में उनके लुक और बोलने के लहजे को तैयार करने के लिए डायरेक्टर अभिषेक वर्मन ने उन्हें मुगल-ए-आजम और उमराव जान जैसी फिल्म और पाकिस्तानी टीवी शो जिंदगी गुलजार है देखने के लिए कहा था। बता दें कि यह शो पाकिस्तान के साथ ही हिंदुस्तान में भी काफी पसंद किया गया था जिसमें फवाद खान और सनम सईद मुख्य भूमिका में थे। हाल में एक इंटरव्यू में आलिया ने कहा, मैंने अपनी बॉडी लैंग्वेज और भाषा को सुधारने के लिए बहुत सारी पुरानी फिल्में देखीं क्योंकि मुझे फिल्म में उर्दु बोलनी थी। अभिषेक ने इसके लिए मुझे पाकिस्तानी शो देखने के लिए भी कहा। फिल्म में मेरा किरदार रूप कुछ ऐसा ही लिखा गया है। यह किरदार हमेशा आपको खुश नजर नहीं आएगा। आलिया ने बताया कि जब वह अपनी पहली फिल्म स्टूडेंट ऑफ द इयर का प्रमोशन कर रही थी तब उन्होंने पहली बार कलंक की कहानी सुनी थी। उन्होंने कहा, मैंने जो स्टोरी सुनी थी वह थोड़ी अलग थी। अभिषेक ने इसे अपने हिसाब से अडैप्ट किया है। कई महीनों के बाद मुझे महसूस हुआ कि अभिषेक ने केवल मुझे ही दिमाग में रखकर यह किरदार लिखा है। पाकिस्तान के साथ ही हिंदुस्तान में भी काफी पसंद किया गया था जिसमें फवाद खान और सनम सईद मुख्य भूमिका में थे। हाल में एक इंटरव्यू में आलिया ने कहा, मैंने अपनी बॉडी लैंग्वेज और भाषा को सुधारने के लिए बहुत सारी पुरानी फिल्में देखीं क्योंकि मुझे फिल्म में उर्दु बोलनी थी। अभिषेक ने इसके लिए मुझे पाकिस्तानी शो देखने के लिए भी कहा। फिल्म में मेरा किरदार रूप कुछ ऐसा ही लिखा गया है। यह किरदार हमेशा आपको खुश नजर नहीं आएगा। आलिया ने बताया कि जब वह अपनी पहली फिल्म स्टूडेंट ऑफ द इयर का प्रमोशन कर रही थी तब उन्होंने पहली बार कलंक की कहानी सुनी थी।गौरतलब है कि इस फिल्म में आलिया भट्ट के अलावा वरुण धवन, संजय दत्त, माधुरी दिक्षित, सोनाक्षी सिन्हा और आदित्य रॉय कपूर भी महत्वपूर्ण भूमिका में है। यह फिल्म १७ अप्रैल को रिलीज होगी।

मैंने बॉडी लैंग्वेज, भाषा को सुधारने के लिए बहुत सारी पुरानी फिल्में देखीं क्योंकि मुझे फिल्म में उर्दु बोलनी थी

थम गया पहले चरण के लिए चुनाव प्रचार, 11 अप्रैल को इन लोकसभा क्षेत्रों में होगा मतदान

(जी.एन.एस.) नोएडा/गाजियाबाद,। Lok Sabha Election 2019ः 11 अप्रैल को प्रथम चरण में होने वाले मतदान के लिए मंगलवार शाम पांच बजे के बाद चुनाव प्रचार थम गया। गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद में 11 अप्रैल को मतदान होगा। चुनाव प्रचार के अंतिम दिन सभी उम्मीदवारों ने जमकर प्रचार किया। उधर, चुनाव आयोग की तरफ से मतदान की अंतिम तैयारियां जोरों पर है। सुरक्षा व्यवस्था के लिए प्रशासन ने कड़ी व्यवस्था की है। चुनाव आयोग (Election commission) के नियमों के तहत उम्मीदवार अब रैली, जनसभा, भाषण और रोड शो नहीं कर सकेंगे। प्रचार गाडियों को नहीं दौडा सकेंगे। केवल घर-घर जाकर शांति से वोट मांगने की इजाजत होगी। कोई प्रत्याशी आदर्श चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करता पाया गया तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। गौतमबुद्धनगर के एडीएम प्रशासन जितेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि निगरानी के लिए कई तरह की टीमें बनाई गई है। मॉनिटरिंग टीम, फ्लाईंग स्क्वायड, स्टैटिक टीम और वीडियोग्राफी टीमें बनाई गई हैं। इन टीमों को क्षेत्र बांटे गए हैं। उनमें निगरानी की जिम्मेदारी इनकी है। मंगलवार शाम पांच बजते ही ये टीमें सक्रिय हो जाएंगी। इन टीमों को कोई भी प्रत्याशी प्रचार करता नजर आया तो उसके खिलाफ आदर्श चुनाव आचार संहिता के तहत कार्रवाई होना तय है। प्रत्याशियों ने इसे देखते हुए शाम पांच बजे से पहले ताबडतोड प्रचार और रैली करने की रणनीति बनाई थी। ज्यादातर प्रत्याशियों ने तय किया था कि सीमित वक्त में ज्यादा क्षेत्रों के लोगों से रूबरू होंगे। स्वतंत्र, निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण, और निर्विघ्न चुनाव के लिए 9 अप्रैल शाम 5 बजे से 11 फरवरी शाम 5 बजे तक शराब की दुकानें बंद रखने का आदेश दिया है। वहीं मतदाताओं के लिए वोट देने की सुविधा के उद्देश्य से 11 अप्रैल को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है। पहले चरण में गौतमबुद्ध नगर-गाजियाबाद समेत पश्चिमी उत्तर प्रदेश की 8 लोकसभा सीटों 11 अप्रैल को मतदान होगा। पहले चरण में वेस्ट यूपी की 8 सीटों के अलावा आंध्र प्रदेश की 25, अरुणाचल प्रदेश की 2, असम की 5, बिहार की 4, छत्तीसगढ़ की 1, जम्मू-कश्मीर की 2, महाराष्ट्र की 7, मणिपुर की 1, मेघालय की 2, मिजोरम की 1, नगालैंड की 1, ओडिशा की 4, सिक्किम की 1, तेलंगाना की 17, त्रिपुरा की 1, उत्तराखंड की 5, पश्चिम बंगाल की 2, अंडमान एंड निकोबार की 1, लक्षद्वीप की 1 सीट शामिल है। इसके साथ ही आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में 11 अप्रैल को विधानसभा चुनावों के लिए भी मतदान होगा।

सैफ अपनी अगली फिल्म प्रड्यूस करने जा रहे है

सैफ की फिल्म जवानी जानेमन में काम नहीं कर रही सारा अली

(संपूर्ण समाचार सेवा) मुंबई,

बॉलिवुड़ ऐक्टर सैफ अली खान अपनी अगली फिल्म जवानी दीवानी को प्रड्यूस करने जा रहे है। बताया जा रहा है कि सैफ के पुराने दोस्त जय शेवकरमानी इस फिल्म को को प्रड्यूसर करेंगे। नितिन कक्कड़ के डायरेक्शन में बन रही इस फिल्म से पूजा बेदी की बेटी आलिया फर्नीचरवाला बॉलिवुड़ में डेब्यू करने जा रही है। ऐसा कहा जा रहा है कि फिल्म में सैफ, आलिया के पिता का रोल अदा करेंगे। हालांकि पहले ऐसी खबरें भी थीं कि इस फिल्म में सैफ की बेटी सारा अली खान को लिया जाएगा लेकिन अब सैफ ने इन खबरों से इनकार कर दिया है। हालांकि सैफ ने कहा कि उन्हें अच्छा लगता अगर सारा इस रोल को करतीं। सैफ ने यह भी बताया कि इस फिल्म को करने के लिए सारा को अपनी दूसरी फिल्मों को छोड़ना पड़ता। सारा के अभी तक के बॉलिवुड़ सफर से सैफ काफी खुश है। उन्होंने यह भी कहा कि जवानी जानेमन के लिए आलिया फर्नीचरवाला परफेक्ट चॉइस है। हालांकि पहले ऐसी खबरें भी थीं कि इस फिल्म में सैफ की बेटी सारा अली खान को लिया जाएगा लेकिन अब सैफ ने इन खबरों से इनकार कर दिया है। हालांकि सैफ ने कहा कि उन्हें अच्छा लगता अगर सारा इस रोल को करतीं। सैफ ने यह भी बताया किवर्कफ्रंट की बात करें तो सैफ की पिछली फिल्म बाजार रिलीज हुई थी जिसमें उनके रोल की काफी तारीफ की गई थी। इस समय सैफ, अजय देवगन के साथ तानाजीः द अनसंग वॉरियर में काम कर रहे हैं जिसमें उनका नेगेटिव रोल होगा।

लोकसभा और विधानसभा चुनाव के लिए सिक्किम में थमा चुनाव प्रचार

(जी.एन.एस.) गंगटोक (पीटीआइ)। सिक्किम की 32 विधानसभा सीटों के अलावा एक लोकसभा सीट के लिए मंगलवार शाम 5 बजे चुनाव प्रचार थम गया। यहां 11 अप्रैल को वोट डाले जाएंगे। सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एसडीएफ) के अध्यक्ष और मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग ने अपने पैतृक जिले, दक्षिण सिक्किम के जोरेटांग में एक विजय संकल्प रैलीको संबोधित किया। विपक्षी सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा (स्यरू) के अध्यक्ष पी. एस. गोले और हमरो सिक्किम पार्टी (HSP) के कार्यकारी अध्यक्ष भाईचुंग भूटिया ने भी दो सप्ताह तक चलने वाले चुनाव प्रचार के लिए चुनावी सभाएं कीं। बता दें कि यहां 32 विधानसभा सीटों पर 150 उम्मीदवार मैदान में हैं, जबकि कुल ग्यारह उम्मीदवार सिक्किम में लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ रहे हैं। प्रमुख उम्मीदवारों में चामलिंग आठवीं बार विधायक बनने के लिए चुनाव ल ? रहे हैं, वो दो सीटों से चुनाव मैदान में हैं, इसके अलावा भाईचुंग भूटिया भी दो विधानसभा सीटों से चुनाव लड रहे हैं। सिक्किम के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) रवींद्र तेलंग के मुताबिक, राज्य में 4,20,306 मतदाता हैं जिनमें 2,20,305 पुरुष और 2,12,001 महिलाएं हैं। सिक्किम में कुल मतदाताओं में से 30,480 पहली बार वोट डालेंगे, जबकि 2,042 मतदाताओं ने खुद को पीपुल्स विद डिसेबिलिटी (पीडब्ल्यूडी) के रूप में पंजीकृत किया है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी के मुताबिक, सिक्किम में कुल 567 मतदान केंद्र होंगे, जिनमें से 120 को महत्वपूर्ण मतदान केंद्रों के रूप में चिन्हित किया गया है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा की दृष्टि से एसएसबी की 10 कंपनियों सहित 3,600 मतदान कर्मियों और 4,000 सुरक्षाकर्मियों को अगले 11 मई को होने वाले मतदान के लिए तैनात किया गया है।

विशेष ट्रेनों की बुकिंग शुरु हो गई है

गर्मी वैकेशन में विशेष ट्रेनें दौडाने का निर्णय किया गया

गर्मी में विशेष ट्रेनों की सेवा से लोगों को राहत होगी

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

पश्चिम रेलवे की ओर से ८ ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों की १८६ सेवाएं पहले ही नई दिल्ली, इंदौर, गांधीधाम, पटना, मैंगलोर के लिए की जा चुकी है। इसके अलावा ८ और ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों की १५८ सेवाओं को मुंबई से जयपुर, अजमेर, जम्मू तवी और गोरखपुर के अलावा अहमदाबाद सेपटना, गांधीधाम से अमृतसर और उधना से आगरा कैंट के लिए प्रारंभ होगी। इन ट्रेनों की बुकिंग शुरु हो गई है। ट्रेन सं. ०९७२४ बांद्रा टर्मिनस-जयपुर साप्ताहिक सुपरफास्ट विशेष ट्रेन बांद्रा टर्मिनस से प्रत्येक गुरुवार सुबह ६.१५ बजे रवाना होगी, जो अगले दिन सुबह ३.१० बजे जयपुर पहुंचेगी। यह ट्रेन २७ जून तक चलेगी। वापसी यात्रा में ट्रेन सं. ०९७२३ जयपुर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट विशेष ट्रेन जयपुर से प्रत्येक बुधवार सुबह ८.१० बजे रवाना होगी, जो सुबह ४.४५ बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन २६ जून तक चलेगी। यह ट्रेन यात्रा के दौरान दोनों दिशाओं में बोरीवली, सुरत, वडोदरा, रतलाम, नीमच, चितौडगढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, किशनगढ़ और कनकपुरा स्टेशनों पर ठहरेगी। ट्रेन सं.०९४११ अहमदाबाद-पटना साप्ताहिक एसी विशेष ट्रेन सोमवार को अहमदाबाद से राहत ११.२५ बजे प्रस्थान करेगी और बुधवार सुबह ८.४५ बजे पटना पहुंचेगी। यह ट्रेन १५ अप्रैल से २४ जून तक चलेगी। वापसी में ट्रेन सं.०९४१२ पटना-अहमदाबाद साप्ताहिक एसी विशेष ट्रेन पटना से बुधवार सुबह ११ बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन शाम ७.०० बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। यह ट्रेन १७ अप्रैल से २६ जून तक चलेगी। यह ट्रेन नडियाद, गोधरा, दाहोद, रतलाम, नागदा, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, हिडोन सिटी, बयाना, आगरा फोर्ट, टुंडला, कानपुर, इलाहाबाद, पं.दीनदयाल उपाध्याय जं., बकसर और आगरा स्टेशन पर रुकेगी। ट्रेन सं.०९६२२ बांद्रा टर्मिनस बांद्रा टर्मिनस अजमेर साप्ताहिक सुपरफाट विशेष ट्रेन बांद्रा टर्मिनस से प्रत्येक सोमवार को ६.१५ बजे रवाना होकर अगले दिन ३.४० बजे अजमेर पहुंचेगी। यह ट्रेन ८ अप्रैल से १ जुलाई, २०१९ तक चलेगी। वापसी यात्रा में ट्रेन सं.०९६२१ अजमेर-बांद्रा में ट्रेन सं.०९६२१ अजमेर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट विशेष ट्रेन अजमेर से प्रत्येक रविवार सुबह ६.३५ बजे रवाना होगी, जो सुबह ४.४५ बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन ३० जून तक चलेगी। ट्रेन सं. ०९७२४ बांद्रा टर्मिनस-जयपुर साप्ताहिक सुपरफास्ट विशेष ट्रेन बांद्रा टर्मिनस से प्रत्येक गुरुवार सुबह ६.१५ बजे रवाना होगी, जो अगले दिन सुबह ३.१० बजे जयपुर पहुंचेगी। यह ट्रेन २७ जून तक चलेगी। वापसी यात्रा में ट्रेन सं. ०९७२३ जयपुर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट विशेष ट्रेन जयपुर से प्रत्येक बुधवार सुबह ८.१० बजे रवाना होगी, जो सुबह ४.४५ बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन २६ जून तक चलेगी। यह ट्रेन यात्रा के दौरान दोनों दिशाओं में बोरीवली, सुरत, वडोदरा, रतलाम, नीमच, चितौडगढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, किशनगढ़ और कनकपुरा स्टेशनों पर ठहरेगी। ट्रेन सं.०९४११ अहमदाबाद-पटना साप्ताहिक एसी विशेष ट्रेन सोमवार को अहमदाबाद से राहत ११.२५ बजे प्रस्थान करेगी और बुधवार सुबह ८.४५ बजे पटना पहुंचेगी। यह ट्रेन १५ अप्रैल से २४ जून तक चलेगी। वापसी में ट्रेन सं.०९४१२ पटना-अहमदाबाद साप्ताहिक एसी विशेष ट्रेन पटना से बुधवार सुबह ११ बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन शाम ७.०० बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। यह ट्रेन यात्रा के दौरान दोनों दिशाओं में बोरीवली, सुरत, वडोदरा, रतलाम, भवानी मंडी, कोटा, सवाई माधोपुरर, दुर्गापुरा, जयपुर और किशनगढ़ स्टेशनों पर ठहरेगी।

८वीं मंजिल पर दोपहर में लगी भीषण आग

देव ओरम् कॉम्पलेक्स में भीषण आग से अफरातफरी

१३ से १४ लोग बेहोश हो जाने से सोला सिविल में भर्ती कराया गया : १०० से ज्यादा लोगों को बचाया

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

शहर के प्रहलादनगर रोड पर आनंदनगर के निकट हरणी सर्कल के पास स्थित देव ओरम् कॉम्पलेक्स के ८वीं मंजिल पर सोमवार को दोपहर में लगी भीषण की वजह से पूरा कॉम्पलेक्स और क्षेत्र में भारी अफरातफरी मच गई। विशेष करके आग में फंसे लोगों को बचाने के लिए एक समय में तो डरावना बन गया। हालांकि, फायरब्रिगेड के जवानों ने काफी प्रयास के बाद यह ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया गया १०० से ज्यादा लोगों को बचाया गया। हालांकि, १३ से १४ लोग आग के धुएं की वजह से बेहोश हो जाने से उनको सोला सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। जिसमें एक की हालत नाजुक माना जा रही है। हालांकि, इस आग की दुर्घटना की वजह से पूरे क्षेत्र में सनसनी मच गई। घंटों की मेहनत के बाद फायरब्रिगेड के जवानों ने पानी का छिटकांव करके आग को नियंत्रण में लिया गया। फायरब्रिगेड विभाग ने बहुत प्रशंसनीय तरीके से पूरे ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया। आग की इस दुर्घटना के केस में गंभीर बात यह सामने आई थी, बीयू परमीशन मिलने के बाद बिल्डिग में जो इन्टर्नल चेंज किया जाता है इसका परिणाम आज सदस्यों को भुगतना पड़ा। लेकिन देव ओरम् कॉम्पलेक्स के जिम्मेदारों ने फायर सेफ्टी के साधनों का उपयोग किया जाए ऐसी स्थिति में साधन नहीं रखने का सामने आया। एडिशनल चीफ फायर ऑफिसर राजेश भट्ट ने इस मामले में बताया कि, शहर के प्रहलादनगर रोड पर आनंदनगर के निकट हरणी सर्कल के पास स्थित देव ओरम् कॉम्पलेक्स में सोमवार को दोपहर में शोर्ट सर्किट की वजह से अचानक भीषण आग लग गई थी। देखते ही देखते आग अन्य मंजिलों तक फैल गई थी विशेष करके आग में फंसे लोगों को बचाने के लिए एक समय में तो डरावना बन गया। हालांकि, फायरब्रिगेड के जवानों ने काफी प्रयास के बाद यह ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया गया १०० से ज्यादा लोगों को बचाया गया। हालांकि, १३ से १४ लोग आग के धुएं की वजह से बेहोश हो जाने से उनको सोला सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। जिसमें एक की हालत नाजुक माना जा रही है। हालांकि, इस आग की दुर्घटना की वजह से पूरे क्षेत्र में सनसनी मच गई। घंटों की मेहनत के बाद फायरब्रिगेड के जवानों ने पानी का छिटकांव करके आग को नियंत्रण में लिया गया। फायरब्रिगेड विभाग ने बहुत प्रशंसनीय तरीके से पूरे ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया। और कॉम्पलेक्स के १०० से ज्यादा लोग इसमें फंस गये। चारों तरफ चीख-पुकार की आवाज सुनाई दे रही थी। इस कॉम्पलेक्स में ८वीं मंजिल सहित के मंजिल पर फंसे लोग मदद के लिए चीख पुकार कर रहे थे। आग की घटना की जानकारी मिलने पर फायरब्रिगेड की टीम १२ से ज्यादा गाडी के काफिले के साथ घटनास्थल पर पहुंच गई थी।

फिर दिखी रिश्तों में गरमाहट

२८ महीने बाद एक मंच पर पीएम मोदी और उद्धव ठाकरे

२०१४ में केंद्र में एनडीए की सरकार बनने के कुछ समय बाद दोनों दलों के बीच मतभेद की खबरें आने लगी थी

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली,

महाराष्ट्र में तमाम गिले-शिकवे भुलाकर लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन करने वाली बीजेपी और शिवसेना के रिश्तों में पुरानी गरमाहट फिर से देखी जा रही है। २०१४ में केंद्र में एनडीए की सरकार बनने के कुछ समय बाद ही दोनों दलों के बीच मतभेद की खबरें आने लगी थी। शिवसेना महाराष्ट्र में बीजेपी के खिलाफ लगातार हमले कर रही थी। हालांकि बीजेपी चीफ अमित शाह, महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस और शिवसेना चीफ उद्धव ठाकरे ने मिल बैठकर आपसी मतभेद दूर कर एकसाथ आने की घोषणा की। लातुर में यह रिश्ता आज उस समय और मजबूत होता दिखा जब पीएम नरेंद्र मोदी और शिवसेना चीफ उद्धव ठाकरे एक दूसरे का हाथ पकड़ २८ महीने बाद एक मंच पर आए। दरअसल, आज की तस्वीर ने दोनों दलों के बीच कड़वाहट को भुला रिश्तों में मधुरता को सामने ला दिया है। पीएम मोदी और उद्धव ने केवल मंच पर हाथ पकड़कर साथ आए बल्कि पीएम ने उद्धव के कंधों पर हाथ रखकर बातें की। बता दें कि इससे पहले शिवसेना पीएम मोदी पर भी लगातार हमले करती थी। खुद बीजेपी चीफ अमित शाह ने कहा था कि दोनों दल मतभेद भुलकरा साथ आए है और यह गठबंधन राज्य में ४५ सीटें जीतेगा। बीजेपी चीफ अमित शाह ने कहा था, दोनों पार्टियों के समर्थकों को कहना चाहता हूं कि शिवसेना और अकाली ने हमेशा अच्छे-बुरे समय में बीजेपी का साथ दिया है। २०१४ में केंद्र में एनडीए की सरकार बनने के कुछ समय बाद ही दोनों दलों के बीच मतभेद की खबरें आने लगी थी। शिवसेना महाराष्ट्र में बीजेपी के खिलाफ लगातार हमले कर रही थी। हालांकि बीजेपी चीफ अमित शाह, महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस और शिवसेना चीफ उद्धव ठाकरे ने मिल बैठकर आपसी मतभेद दूर कर एकसाथ आने की घोषणा की। लातुर में यह रिश्ता आज उस समय और मजबूत होता दिखा जब पीएम नरेंद्र मोदी और शिवसेना चीफ उद्धव ठाकरे एक दूसरे का हाथ पकड़ २८ महीने बाद एक मंच पर आए। दरअसल, आज की तस्वीर ने दोनों दलों के बीच कड़वाहट को भुला रिश्तों में मधुरता को सामने ला दिया है। पीएम मोदी और उद्धव ने केवल मंच पर हाथ पकड़कर साथ आए बल्कि पीएम ने उद्धव के कंधों पर हाथ रखकर बातें की। मुझे खुशी है कि दोनों पार्टियां मतभेदों को भुलकर आगे बढ़ रही है। हम दोनों कई मुद्दों पर साथ आगे बढ़े है। आने वाले चुनाव में हम विजयी बनेंगे। सेना और बीजेपी को कम से कम ४५ सीटें मिलेंगी।

भारी विवाद के बाद चुनाव आयोग सक्रिय हुआ

मतदाताओं को धमकी देने पर मधु श्रीवास्तव से खुलासा मांगा

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

वडोदरा में मतदान के दौरान मतपेटी में यदि भाजपा का कमल नहीं खिला तो मतदाताओं को मार देने की खुलेआम धमकी देकर बदमाशी करने वाले भाजपा के विधायक मधु श्रीवास्तव को भारी विवाद और हंगामे बाद आखिर में चुनाव आयोग ने नोटिस भेजा है और तीन दिन में लिखित में खुलासा करने के लिए आदेश दिया गया है। जिसे लेकर राजनीति गर्मा गई है। चुनाव आयोग की कार्रवाई बाद भाजपा के विधायक की परेशानी बढ़ गई है और उनके विरूद्ध चुनाव आचारसंहिता भंग की बात साबित होगी तो उनके विरूद्ध विधिवत शिकायत सहित की कार्रवाई हो सकती है। वडोदरा लोकसभा सीट के भाजपा की उम्मीदवार रंजनबहन भट्ट के समर्थन में हाल में वाघोडिया में जनसभा आयोजित की गई थी। यह जनसभा में संसदीय सचिव और वाघोडिया के विधायक मधु श्रीवास्तव ने वाघोडिया में रहते बाहर के मतदाताओं को खुलेआम धमकी दी थी यदि कमल को मत नहीं दिया तो मार देने की धमकी दी। दूसरी तरफ, मधु श्रीवास्तव का यह विडियो सोशल मीडिया काफी वायरल होने पर लोगों में इस प्रकार की धमकी देने वाले भाजपा के विधायक विरूद्ध भारी नाराजगी रही है। जिसका सीधा असर परिणामों पर होने की और भाजपा को बड़ा झटका लगने की संभावना भी राजनीतिक विशेषज्ञ व्यक्त कर रहे है। भाजपा के विधायक मधु श्रीवास्तव ने वाघोडिया की प्रचारसभा में निशाना साधते हुए कहा कि, सभी बूथ के अंदर कमल का निशान निकलना चाहिए। यदि कमल के निशान नहीं निकले तो कान खोलकर सुन लो अवैध तरीके से रहते लोगों को मार देने की धमकी दी । मैं नहीं लड़ता हूं। पानी, ड्रेनेज, लाइट आदि की सुविधा उपलब्ध करा रहे है। आप टैक्स नहीं चुकाते हो हमें मालूम है। इस बार भी कमल जीतेगा। इसमें दो मत नहीं है और दिल्ली की सत्ता पर नरेन्द्र मोदी बिराजमान होंगे। इसमें भी दो मत नहीं है। भाजपा को सत्ता में आने से कोई रोक नहीं सकता है।

लोकसभा चुनाव : २४९ करोड़ की संपत्ति

यूपी में पहले चरण में बीएसपी के मलूक नागर सबसे अमीर

इलेक्शन वॉच और असोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की रिपोर्ट में कई दिलचस्प आंकड़े सामने आए

(संपूर्ण समाचार सेवा) लखनऊ,

लोकसभा चुनाव के पहले चरण के मतदान में अब महज दो दिन का वक्त बचा है। इस चरण में उत्तर प्रदेश की आठ लोकसभा सीटों पर मतदान होना है। इलेक्शन वॉच और असोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की रिपोर्ट में कई दिलचस्प आंकड़े सामने आए है। बिजनौर सीट से एसपी-बीएसपी-आरएलडी गठबंधन के कैंडिडेट मलूक सिंह नागर सबसे अमीर उम्मीदवार हैं। वहीं, शिवपाल यादव की पार्टी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी लोहिया के बागपत चौधरी मोहकम सबसे गरीब कैंडिडेट हैं। पहले चरण में यूपी की आठ लोकसभा सीटों पर होने वाले चुनाव में प्रमुख राजनीतिक दलों ने ज्यादातर आपराधिक पृष्ठभूमि वाले या करोड़पति उम्मीदवारों पर ही दांव लगाया है। ९६ उम्मीदवारोँ में से २४ के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज है। यही नहीं इनमें १७ पर तो गंभीर धाराओं में मुकदमे दर्ज है। एडीआर की रिपोर्ट के मुताबिक पहले चरण में उतरे ४१ प्रतिशत प्रत्याशी करोड़पति है। प्रमुख राजनीतिक दलों के सभी प्रत्याशी करोड़पति हैं। त्तर प्रदेश की आठ लोकसभा सीटों पर मतदान होना है। इलेक्शन वॉच और असोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की रिपोर्ट में कई दिलचस्प आंकड़े सामने आए है। बिजनौर सीट से एसपी-बीएसपी-आरएलडी गठबंधन के कैंडिडेट मलूक सिंह नागर सबसे अमीर उम्मीदवार हैं ।हलफनामे में दी गई जानकारी के मुताबिक बिजनौर सीट से बीएसपी के टिकट पर मैदान में उतरे मलूक नागर २४९ करोड़ रुपये की संपत्ति के साथ टॉप पर हैं। दूसरे नंबर पर गौतम बुद्ध नगर से चुनाव लड़ रहे बीजेपी प्रत्याशी महेश शर्मा है। उन्होंने ॉ अपनी संपत्ति ४७ करोड़ रुपये दिखाई है। इसके अलावा बागपत सीट से भाग्य आजमा रहे आरएलडी के जयंत चौधरी २७ करोड़ की संपत्ति के साथ तीसरे नंबर पर है।

लोकसभा चुनाव में चौकीदार सबसे ज्यादा चर्चा में

गुजरात के मंदिरो में सदियों से हो रही है चौकीदार की पूजा

मोदी सहित मंत्रियों, बीजेपी नेताओं ने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट में नाम के आगे चौकीदार लगा लिया

(संपूर्ण समाचार सेवा) बड़ौदा,

इस बार लोकसभा चुनाव में चौकीदार सबसे ज्यादा चर्चा में है। देखते ही देखते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित केंद्र के सभी मंत्रियों और बीजेपी नेताओं ने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट में नाम के आगे चौकीदार लगा लिया है। हालांकि गुजरात के नर्मदा जिले में एक ऐसा चौकीदार है जिसे सदियों से पूजा जा रहा है। दरअसल यहां चौकीदार को समर्पित देवदरवनिया चौकीदार मंदिर है। भरूच लोकसभा सीट में आने वाले देदियापाड़ा तालुक स्थित देव मोगरा गांव के निवासियों का मानना है कि देवदरवनिया चौकीदार सालों से उनके गांव की रक्षा कर रहे है। गांव के निवासी मानसिंह वसावा ने बताया, हम इन दिनों पीएम मोदी के मुंह से चौकीदार शब्दबार बार सुन रहे हैं। लोग अपने नाम के आगे चौकीदार लगाकर काफी गर्व महसूस कर रहे हैं लेकिन हम एक चौकीदार की भगवान के रूप में लंबे समय से पूजा कर रहे है। स्थानीय लोगों के अनुसार, देवी पंडोरी माता ने नाराज होकर घर छोड़ दिया था। राजा पंडादेव ने उनकी तलाश करनी शुरू की और अपना धोड़ा देव मोगरा गांव में रोका। मानसिंह ने बताया, वह जगह स्थानीय लोगों के लिए पूजनीय हो गई और बाद में वहां पंडोरी माता का मंदिर बनवाया गया। इस मंदिर से कुछ दुरी पर देवदरवनिया चौकीदार के लिए भी एक प्रार्थना स्थल बनाया गया। गांव के निवासी कालू वसावा बताते है, ऐसा माना जाता है कि देवदरवनिया चौकीदार देवी और हमारे गांव की रक्षा करते हैं। जो भक्त पंडोरी माता की पुजा करने आते है, उन्हें पहले चौकीदार मंदिर के दर्शन करने होते है। न सिर्फ गुजरात बल्कि महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्यप्रदेश से श्रद्धालु भी यहां आकर पंडोरी माता के दर्शन करते है।

साणंद के कांग्रेस के मंत्री गौतम रावल का विवाद

बुजूर्ग व्यक्ति को थप्पड़ मार कर मार देने की धमकी का विवाद

पूरे मामले में शिकायत दर्ज कराई गई थी : चुनाव के समय कांग्रेस के ऐसे नेता पार्टी को नुकसान पहुंचायेंगे

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

गुजरात विधानसभा चुनाव के समय कांग्रेस का एक मंच के तौर पर उपयोग करके आर्थिक लाभ लेने के अलावा पार्टी को नुकसान पहुंचाने का काम कर रहे होने का गंभीर आरोप जिन पर पहले लगाया गया था, यह साणंद के प्रदेश कांग्रेस मंत्री गौतम रावल को गुजरात प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अमित चावडा द्वारा पदों को बांटने का काम करते कुछ समय पहले ही भारी विवाद हुआ था तब साणंद के कांग्रेस के यह मंत्री गौतम रावल लोकसभा चुनाव के समय ही और एक विवाद में घिर चुके हैं। कुछ समय पहले ही साणंद कांग्रेस के मंत्री गौतम रावल ने ८४ वर्षीय बुजूर्ग व्यक्ति को थप्पड़ मारकर मार देने की धमकी देने पर पूरा मामला साणंद पुलिस स्टेशन तक पहुंच गया। ८४ वर्षीय बुजूर्ग व्यक्ति ने गौतम रावल के विरूद्ध साणंद पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करने पर मामला बिगड़ चुका है। दूसरी तरफ, लोकसभा चुनाव के समय कांग्रेस पार्टी के ऐसे नेता पार्टी को नुकसान पहुंचायेंगे और कांग्रेस को मंच के तौर पर उपयोग करने की निम्न मानसिकता से बाहर नहीं आयेंगे और पार्टी को हरा देंगे। साणंद के प्रदेश कांग्रेस मंत्री गौतम रावल के कार्य से राजनीतिक गलियारों में जोर-शोर से चर्चा हो रही है। एक तरफ, कांग्रेस यह सभी विवादों से बाहर निकलना चाहती है, भाजपा में कांग्रेस के इस आंतरिक विवाद को लेकर लोग नाराज हो गये है और लोकसभा चुनाव के समय इसका पूरा राजनीतिक लाभ लेना चाहती है। इस बारे में यह जानकारी है कि, साणंद की प्रसिद्ध जडीबा हाईस्कूल का मैनेजमेन्ट छीनने के लिए साजिश रच रहे गौतम रावल को कानूनी रूप से हार मिलने पर नाराज हो गये थे और कुछ समय पहले उनके साथीदार जेसंगजी ठाकर को लेकर नल सरोवर रोड पर स्थित जडीबा हाईस्कूल पर पहुंच गये थे। उस समय १८ वर्ष से ट्रस्टी के तौर पर सेवा देते ८४ वर्षीय बुजुर्ग व्यक्ति बालुभाई पटेल स्कूल के आचार्य के साथ चेरिटी कमिशनर से आये पत्र की चर्चा करते थे। गौतम रावल ने कागज पढ़ने के लिए मांगा ऐसे तो आयेंगे यह कहकर कागज फेंक कर बालुभाई को गाली देने लगे ट्रस्टी बालु ने इस प्रकार से गाली नहीं बोलने का कहने पर नाराज गौतम रावल ने ८४ वर्ष के बुजूर्ग ट्रस्टी को गाल पर थप्पड़ मार दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने खारिज की याचिका

पीएम नरेन्द मोदी बायॉपिक EC लेगा रिलीज पर फैसला

(संपूर्ण समाचार सेवा) मुंबई,

सुप्रीम कोर्ट ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बायॉपिक पीएम नरेंद्र मोदी की रिलीज रोके जाने के लिए दाखिल की गई याचिका को खारिज कर दिया है। कोर्ट ने कहा है कि इस मामले पर फैसला लेने का अधिकार चुनाव आयोग के पास है और उसे ही इस पर निर्णय लेना होगा। फिल्म पर आरोप है कि यह आदर्श चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करती है। कोर्ट ने याचिका को खारिज करते हुए कहा कि अभी तक सेंसर बोर्ड ने फिल्म को सर्टिफिकेट भी नहीं दिया है। साथ ही, केवल चुनाव आयोग ही यह फैसला ले सकता है कि यह फिल्म आदर्श चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करती है या नहीं। इससे पहले मंगलवार को याचिकाकर्ता ने कहा था कि कोर्ट फिल्म के डायरेक्टर को फिल्म की कॉपी दिए जाने का आदेश दे, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया था। कोर्ट ने कहा है कि इस मामले पर फैसला लेने का अधिकार चुनाव आयोग के पास है और उसे ही इस पर निर्णय लेना होगा। फिल्म पर आरोप है कि यह आदर्श चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करती है। कोर्ट ने याचिका को खारिज करते हुए कहा कि अभी तक सेंसर बोर्ड ने फिल्म को सर्टिफिकेट भी नहीं दिया है। बता दें कि पहले इस फिल्म की रिलीज को रोके जाने की याचिकाएं बॉम्बे हाई कोर्ट, दिल्ली हाई कोर्ट और जबलपुर हाई कोर्ट ने भी खारिज कर दी थीं और फिल्म की रिलीज को टालने से इनकार कर दिया था। फिल्म के मेकर्स के मुताबिक यह फिल्म ११ अप्रैल को रिलीज की जा सकती है। इस फिल्म में विवेक ऑबेरॉय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के किरदार में दिखाई देंगे।

जीतू वाघाणी का फिर एक बार बिगड़े बोल

सूरत में कांग्रेसी को हरामजादा कहने पर राजनीति गर्मा गई

चुनाव में हार से निराश हो गये भाजपा के नेता जीतू वाघाणी बिगड़े बोल बंद करे और माफी मांगे : कांग्रेस

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

गुजरात भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष जीतू वाघाणी पिछले कई दिनों से बिगड़े बोल की वजह से विवादों में घिर चुके है। हालांकि, अब तो उन्होंने हद पार करते हुए उन्होंने सूरत में रविवार रात को एक सभा में कांग्रेस के लिए हरामजादा शब्द का प्रयोग किया है। कांग्रेस के नेताओं को सूरत से भगा देने की धमकी देने पर वाघाणी ने फिर बिगड़े बोलने से यह मामले पर राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। कांग्रेस पार्टी में वाघाणी के अपमानजनक और चुनावी आचारसंहिता का भंग हो इस प्रकार के उच्चारण को लेकर कड़ी प्रतिक्रिया हुई है। कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने आगामी लोकसभा चुनाव में अभी से ही हार का संकेत मिल जाने से और निराश होकर भाजपा के नेता बिगड़े बोल बंद करे ऐसी चेतावनी दी है और तुरंत वाघाणी के मुद्दे पर वाघाणी सहित भाजपा माफी मांगे तब यह मांग की गई है। कांग्रेस की

तरफ से यह मामले में चुनाव आयोग में वाघाणी के विरूद्ध गंभीर शिकायत करने की कार्रवाई शुरू की गई है। उल्लेखनीय है कि, सूरत में कलेक्टर ऑफिस पर नामांकन फॉर्म भरते समय भाजपा और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के बीच हुई मारपीट की घटना मामले में वाघाणी ने कांग्रेस को खुली धमकी दी थी। हालांकि, राज्य का चुनाव आयोग धृतराष्ट्र की जैसे फिर एक बार यह मामले में मूक प्रेक्षक बन रहा है और गाली बोलने पर वाघाणी के खिलाफ कोई कार्रवाई करना तो दूर इसे ध्यान पर नहीं लिया गया है। सूरत में ओलपाड विधानसभा मतक्षेत्र के तहत अमरोली क्षेत्र में भाजपा की महिला उम्मीदवार दर्शना जरदोश की चुनावी कार्यालय का रविवार रात को उद्घाटन करने के लिए वाघाणी आये थे। इस अवसर पर उन्होंने शुरू में कांग्रेस पर निशाना साधा और उनके कार्यकर्ताओं पर बदमाशी करने का आरोप लगाया था। उन्होंने यह भी कहा कि, आपकी बदमाशी की एक घटना हुई है, यदि दूसरी होगी तो सूरत से भगा देंगे। इस मामले में प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस के प्रवक्ता डॉ. मनीष दोशी ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि, गाली देना, बिगड़े बोल बोलना यह भाजपा के संस्कार है।

अहमदाबाद में गर्मी की वजह से चंडोला तालाब सुख गया है।
(संपूर्ण समाचार सेवा)

अहमदाबाद में तापमान ४१.५ डिग्री दर्ज किया गया

गुजरात में झुलसाने वाली गर्मी यथावत रुप से जारी

मौसम विभाग ने फिर से लू लगने की चेतावनी दी है

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

गुजरात में सोमवार को भी झुलसाने वाली गर्मी यथावत रही। अहमदाबाद शहर में एक बार फिर तापमान ४१.५ डिग्री सेन्टीग्रेड तक पहुंच गया। राज्य में सबसे अधिक तापमान अहमदाबाद में और सुरेन्द्रनगर में दर्ज हुआ। सुरेन्द्रनगर में तापमान ४१.३ डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने तीन दिन बाद फिर से लू की चेतावनी दी है। अहमदाबाद शहर में सोमवार को कड़ी धूप के बीच गर्म हवाएं चली। जिसके चलते सड़कों पर ट्रैफिक आम दिनों की तुलना में काफी कम देखा गया। बाजारों में भी आवागमन कम रहा। दो दिन के बाद शहर का तापमान फिर से ४१.५ डिग्री तक पहुंच गया जो राज्य के कंडला एयरपोर्ट एवं सुरेन्द्रनगर के बाद सबसे अधिक है। मौसम विभाग ने तापमान में कमी आने की संभावना जताई है। इसके बाद बुधवार से फिर से विविध क्षेत्रों में लू की चेतावनी दी है। जिसमें बताया गया है कि गुरुवार को उत्तर गुजरात रीजन के बनासकांठा एवं साबरकांठा, सौराष्ट्र रीजन के राजकोट, सुरेन्द्रनगर तथा अमरेली और कच्छ रीजन के कच्छ जिले में विविध भागों में लू का प्रकोप रह सकता है। सबसे अधिक ४१ डिग्री से भी जिन शहरों में तापमान दर्ज किया उसमें अमदावाद में ४१.५, गांधीनगर में ४१.२, अमरेली में ४१.३, राजकोट में ४१.३, सुरेन्द्रनगर में ४१.३ डिग्री तापमान दर्ज किया गया।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 and Published from TF-01, Nanakram Super Market,Ramnager,Sabarmati, Ahmedabad - 380 005.Editor : MANOJKUMAR CHAMPKLAL SHAH